मैं हार गया जग से | by Surpreet Sunny

मैं हार गया जग से अब तुमको पुकारा है
दुनिया से सुना है तू हारे का सहारा है
हारे का सहारा है .....
मैं हार गया जग से.....

मैं रात अमावस की तुम सुख का सवेरा हो
तेरे बिन सुनता नहीं कोई दु:ख मेरा हो
कोई दु:ख मेरा हो .....
तू सुनता है सबकी मुझसे क्यों किनारा है
दुनिया से सुना है तू हारे का सहारा है
हारे का सहारा है .....
मैं हार गया जग से.....

ये कैसा भंधन है ये कैसा नाता है
हर पल तू यादों में आता और जाता है
आता और जाता है .....
तेरी सांवरी सूरत को अब मन में उतारा है
दुनिया से सुना है तू हारे का सहारा है
हारे का सहारा है .....
मैं हार गया जग से.....

दुनिया की खा ठोकर दर तेरे आया हूँ
सर पर अब हाथ धरो मैं बहुत सताया हूँ
मैं बहुत सताया हूँ .....
प्रवीण का तेरे बिन पल भर ना गुज़ारा है
सनी का तेरे बिन पल भर ना गुज़ारा है
दुनिया से सुना है तू हारे का सहारा है
हारे का सहारा है .....
मैं हार गया जग से.....

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%ae%e0%a5%88%e0%a4%82-%e0%a4%b9%e0%a4%be%e0%a4%b0-%e0%a4%97%e0%a4%af%e0%a4%be-%e0%a4%9c%e0%a4%97-%e0%a4%b8%e0%a5%87-by-surpreet-sunny/